Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 07/December/2023 IJRAW: 2024; 3(1):217-221 Accepted: 04/January/2024

अफ्रीकी नागरिकों का दैनिक जीवन और सांस्कृतिक विविधता: किशनगढ़ क्षेत्र दिल्ली का एक अध्ययन

[*1]Apoorva

[*1]Ph.D. Student, Department of African Studies, Delhi University, Delhi, India.

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में अफ्रीकी नागरिकों के दैनिक जीवन और सांस्कृतिक विविधताओं को विश्लेषण करने का प्रयास किया किया है। अध्ययन में अफ्रीकी समुदायों के मध्य भेदभाव, सांस्कृतिक अलगाव, और सामाजिक संरचना पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसी के साथ अफ्रीकी नागरिकों के जीवन में विभिन्न पहलुओं को जांचा गया है, जैसे कि उनके सांस्कृतिक विरासत, समाजिक संगठन, और भेदभाव के कारण आदि। प्रस्तुत अध्ययन में अफ्रीकी समुदायों के साथी नागरिकों के स्थानीय निवासस्थानों में मान्यताओं और रोजगार के विकल्पों का भी विशेष ध्यान दिया गया है। इसके साथ ही, अफ्रीकी समुदायों के भीतर समाज में एकीकृत होने में आने वाले चुनौतियों का भी विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन ने अफ्रीकी पहचान के निर्माण में योगदान देने वाले कारक, और उनके सांस्कृतिक, आर्थिक, और राजनीतिक आयामों को समझने में मदद की है। शोध पत्र अफ्रीकी समुदायों के बीच संबंधों के महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी गहराई से जांच की करता है। भारत में और अफ्रीका में अफ्रीकी समुदायों के स्थानीय विकासक्षमता में जिस तरह के बदलाव और प्रवासी प्रवृत्ति का परिणाम है, उस पर भी विचार किया गया है। इसी के साथ अध्ययन में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अफ्रीकी अध्ययनों के महत्व को भी बताया गया है। अफ्रीकी समुदायों के बीच विभिन्न सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करके इस अध्ययन ने उनके अलगाव और सांस्कृतिक परिचय को समझने में मदद की है। अध्ययन के माध्यम से अफ्रीकी समुदायों के जीवन में उत्पन्न बदलाव और सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में मदद मिलती है और उनके साथी नागरिकों के स्थानीय समाज में एकीकृत होने की प्रक्रिया को समझने में सहायक होती है।

मुख्य शब्द: किशनगढ़, अफ्रीकन समुदाय, अफ्रीकी नागरिक और भेदभाव, अफ्रीकी नागरिक और सांस्कृतिक परिचय, अफ्रीकी नागरिक और स्थानिक अलगाव।

प्रस्तावना

भारत ने 2030 के लिए सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) और 1965 के सभी प्रकार के नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की पुष्टि की है। एसडीजी 2030 समावेशी और सतत विकास के लिए सत्रह सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार करता है। इस लेख का उद्देश्य सतत विकास प्राप्त करने के लिए अंतर्दृष्टि और सिफारिशें प्रदान करना है। इस लेख का उद्देश्य भारत के किशनगढ़ में 'अफ्रीकी समुदायों' की जांच करके समावेशी मानव बस्तियों और नस्लीय भेदभाव पर नीतिगत चर्चा में योगदान देना है। प्रस्तुत अध्ययन भेदभाव और स्थानिक असमानता की व्यापक प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करता है जो मानव बस्तियों की समावेशिता को कमजोर करती हैं। इसके अलावा, यह अफ्रीकी नागरिकों के प्रति भेदभाव और अन्य प्रकार के दुर्व्यवहार की पड़ताल करता है। प्रस्तुत लेख व्यक्तिगत अनुभवों और सैद्धांतिक ढाँचों दोनों से प्रेरणा लेकर सामाजिक और स्थानिक बहिष्कार पर गहराई से प्रकाश डालने का प्रयास करता है। प्रस्तुत इस लेख में, 'अफ्रीकी नागरिक' उन व्यक्तियों को संदर्भित करता है जो सोमालिया, रवांडा, तंजानिया, युगांडा, बुरुंडी, घाना, केन्या, कांगो, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआर) सहित विभिन्न अफ्रीकी देशों और जातीय समुदायों से भारत आए [1] इसी के साथ प्रस्तुत लेख का उद्देश्य किशनगढ़ क्षेत्र में अफ्रीकी निवासियों की गरीबी का विश्लेषण करना, उनके स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने वाली योजनाओं को समझना, उनके बच्चों के द्वारा प्राप्त की जा रही शिक्षा की गुणवत्तापूर्ण को जाँचना, सभ्य रोजगार और आर्थिक अवसरों तक उनकी पहुंच के लिए स्थापित तंत्र को परखना तथा जांचना कि यह समाज में कैसी असमानताओं का सामना कर रहे हैं और इनकी न्याय तक पहुंच का स्वरूप कैसा है। इसी के साथ अफ्रीकी समुदायों की स्थिरता को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है तथा वर्तमान समय में यह अपनी चुनौतियों का सामना कैसे करते हैं।

किशनगढ़ क्षेत्र का परिचय

किशनगढ़ एक शहरी गांव है। यह गाँव भारत के दिल्ली के दक्षिण

***Corresponding Author:** Apoorva

पश्चिम दिल्ली जिले में वसंत कुंज के पास, महरौली और वसंत कुंज के बीच, अरावली की पहाड़ियों पर स्थित है। किशनगढ़ का एक छोर ऐतिहासिक महरौली क्षेत्र में कुतुब मीनार से लगभग 4 किमी दूर है, दूसरा छोर इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से लगभग 7.5 किमी दूर है। मुनिरका लगभग 5 किमी दूर है, जहां मुख्य वसंत कुंज मार्ग को बाहरी रिंग रोड से जोड़ने वाला अरुणा आसफ अली मार्ग इसकी पश्चिमी सीमा बनाता है। किशनगढ़ दक्षिणी दिल्ली नगर निगम महरौली और महरौली के अंतर्गत आता है और गांव में कोई पंचायत व्यवस्था नहीं है।

अफ्रीकी समुदाय का परिचय

ऐतहासिक तथ्यों के अनुसार माना जाता है कि भारत में अफ्रीकी मूल के व्यक्ति छठी और सातवीं शताब्दी से ही भारत में प्रवास कर रहे हैं। ऐतिहासिक प्रवास के कारण अफ्रीकी मूल के व्यक्तियों जिन्हें सिद्दी समुदाय के नाम से जाना जाता है, ने शुरुआत में भारत के पश्चिमी तट पर स्थायी बस्तियाँ स्थापित करना आरंभ किया [2] । वर्तमान समय में सिद्दी समुदाय सफलतापूर्वक मेजबान समाज के रूप में एकीकृत हो रहा है। किन्तु, समकालीन समय में, इसका एक नया स्वरूप सामने आया है जो कि सांस्कृतिक एकीकरण को चुनौती देता हुआ प्रतीत होता है। वर्तमान समय में किशनगढ़, दिल्ली, भारत के शहरी क्षेत्र में अफ्रीकी समुदायों (जो कि नागरिकहैं) को अधिक संख्या में निवास करते हुए पाया जाता है। यह तथ्य शोधार्थी ने अपने क्षेत्र अध्ययन से प्राप्त किए हैं। अफ्रीकी समुदाय के व्यक्ति अधिक संख्या में किशनगढ़ क्षेत्र में इसलिए निवास करते हैं कि इनको दिल्ली के अन्य हिस्सों में आवास नहीं मिल पाता और किशनगढ़ क्षेत्र के मकान मालिक इनको आसानी से किराये पर अपना मकान दे देते हैं। जिस कारण समय के साथ इस क्षेत्र में अफ्रीकी नागरिकों की संख्या अधिक हो गई और यहाँ वर्तमान समय में यहाँ पर यह एक समुदाय के रूप में निवास करते हुए पाए जाते हैं। किशनगढ़ क्षेत्र में यह कुछ में विशिष्ट गलियों में बनी इमारतों में ही निवास करते हैं, जहाँ पर खास इनके लिए ही मकान मालिकों ने आवास उपलब्ध कराए हुए हैं। ऐसा नहीं है की इनको किशनगढ़ क्षेत्र में सभी स्थानों पर मकान किराये पर मिल जाता है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ स्थानों पर अफ्रीकी व्यक्तियों के समूहों का निर्माण हो रहा है जो की वर्तमान समय में जिन्हें वर्तमान समय में इन स्थानों पर समुदाय के रूप में निवास करते हुए देख सकते हैं। इसी के साथ क्षेत्र अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के अनुसार यह पाया गया कि रियल एस्टेट एजेंटों और मकान मालिकों के बीच जो करार होता है उसको यह जानते हैं कि किराए के लिए आवास यहाँ पर आसानी से उपलब्ध हो जाता है। इस प्रकार माना जा सकता है कि, अफ्रीकी समुदाय को उन दोस्तों तथा सगे संबंधियों के जनसम्पर्क के माध्यम से वह उन दलालों तक पहुंच गए जहां उनको किराये पर मकान मिल गया। जिससे यहाँ के समाज में यह घटित हुआ कि यह अफ्रीकी नागरिक उन्हीं आवासीय क्षेत्रों में बस गए जहां पर इनको आसानी रहने के लिए किराये पर मकान मिल गये। हालाँकि, कोयल वर्मा यह तर्क देती हैं कि समाज में घटने वाली ऐसी घटनाये स्थानिक एकाग्रता स्वतंत्र विकल्प का परिणाम नहीं हैं, बल्कि यह आइक एक शहरी प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप समाज में स्थानिक समूहों का उदय होता है [3] । इसी के साथ मोहन लाल गुज्जर (किशनगढ़ क्षेत्र के मकान का मालिक) बताते हैं कि किशनगढ़ क्षेत्र एक अनाधिकृत आवास कॉलोनी है जो कि कानूनन बेध नहीं है जहां पर पानी की अत्याधिक समस्या रहती है और यहाँ पर अधिकतर कमजोर वर्ग के व्यक्ति ही किराये पर निवास करने आते हैं। इसी के साथ यहाँ पर अफ्रीकी नागरिकों को भी सस्ते दामों पर मकान मिल जाता है [4] किन्तु यह बात भी तथ्यात्मक रूप से सही है कि अफ्रीकी नागरिक सामान्य किरायेदारों की तुलना में अधिक किराया देते हैं। इसी के साथ दीपक कुमार बताते हैं कि यह आवास इस कारण अनधिकृत माने जाते हैं क्योंकि इन मकानों के निर्माण के लिए अधिकारियों से अनुमति नहीं ली गई गई है और ना ही किसी ने नक्सा पास कराया है। यहाँ पर हर किसी ने अपनी मर्जी से किराये के उद्देश्य से मकानों का निर्माण आधुनिक ढंग से किया है किन्तु यह है तो अनाधिकृत आवास कॉलोनी ही है। यही कारण हैं की यहाँ के मकान मालिक अफ्रीकी नागरिकों को अपने मकान किराए पर देना पसंद करते हैं क्योंकि यहाँ पर कोई भी संभ्रांत वर्ग का व्यक्ति आकार रहना पसंद नहीं करता है [5] । रोजा (अफ्रीकी महिला नागरिक) कहती हैं कि किशनगढ़ दिल्ली के उन कुछ शहरी क्षेत्रों में से एक है जहां पर अफ्रीकी नागरिकों को रहने के लिए आवास मिल जाता है, उसके लिए भले ही कीमत अधिक क्यों ना चुकानी पड़े। 24 वर्षीय अफ्रीकी नागरिक रोजा यह मानती हैं कि अफ्रीकी नागरिकों के आने से किशनगढ़ पहले की तुलना में अधिक विकसित हुआ है, और अफ्रीकी नागरिकों के बसने कारण यहाँ की स्थानीय अर्थव्यवस्था में उन्नति हुई है क्योंकि हम लोग बाजार दर से दोगुनी कीमत पर आवास किराए पर लेते हैं, जो कि भारतीय नागरिकों की तुलना में हमारे साथ भेदभाव है जिसका संज्ञान भारतीय सरकार को लेना चाहिए [6] । इसी के साथ रोजा आगे बताती हैं कि यहाँ पर लोगों ने यह मान कर चलते हैं कि हम अफ्रीकी नागरिक किसी भी हालत में सामान्य लोगों की तुलना में अधिक मेंहगा मकान किराये पर लेयएंगे क्योंकि यह इनकी मजबूरी है, इसी के साथ वह यह भी मानती हैं कि यहाँ पर सभी मकान मालिकों में यह मान्यता है कि यदि कोई भी अफ्रीकी किराये पर मकान लेने आता है तो उसको अधिक कीमत के साथ ही देना है जो की गलत है [7] ।

किशनगढ़ क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता द्वारा किए गए क्षेत्रअध्ययन से यह तथ्य प्राप्त हुए की अफ्रीकी नागरिक अधिकतर संकरी गलियों में निवास करते हैं, जिसके लिए 30 वर्षीय अफ्रीकी नागरिक जैस्मिन का कहना है कि मात्र कुछ मकान मालिक की हुमारे साथ मानवीय व्यवहार करते हैं किन्तु अधिकतर मकान मालिक मुख्य रूप से पैसा कमाने के इच्छुक व्यक्ति ही हैं जो कि अपने घर को किराए पर देते रहते हैं। जैस्मिन आगे बताती हैं कि जिन स्थानों पर हम निवास करते हैं वहाँ से जल निकासी प्रणालियाँ और पाइप दोनों ख़राब स्थिति में रहते हैं [8] । सीवेज का पानी सड़कों पर धीरे धीरे रिस रहा होता है, जिससे नालियों में से बुरी दुर्गंध पैदा हो रही होती है जिससे कि यहाँ वायु प्रदूषण भी अधिक है। इसी के साथ 36 वर्षीय गुलाबों अफ्रीकी महिला नागरिक ने बताया कि जिन घरों में हमारे समुदाय के व्यक्ति निवास करते हैं ऊब घरों में सूरज की रोशनी बहुत कम या बिल्कुल नहीं मिलती है तथा यहाँ पर पानी की आपूर्ति बहुत कम स्थिति में आती है, तथा इन घरों में बहुत काम रोशनदान लगे होते हैं, क्योंकि यह मकान अधिकतर बहुत संकरी गलियों में बनाए गए होते हैं जो कि बहुत पास-पास होते हैं [9] ।

आवास ख़राब स्थिति में होते हैं क्योंकि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह केवल अस्थायी उपयोग के लिए बनाये गये होते हैं। यहाँ के मकान मालिकों ने किशनगढ़ के अन्य हिस्सों में अफ्रीकी नागरिकों को आवास खोजने में कठिनाई का फायदा उठाते हुए यह हमसे अधिक किराया वसूलते हैं। इस शहरी क्षेत्र में अफ्रीकी निवासियों की सघनता का यह एक प्राथमिक कारण है जिसके परिणामस्वरूप, यहाँ पर नागरिक अपने समुदायों में शामिल होकर एक-दूसरे के आस पास आकर बसने लगे। किशनगढ़ की बस्तियाँ अनाधिकृत होते हुए भी कम अफ्रीकी नागरिकों से दिल्ली के अन्य क्षेत्रों की तुलना में काम किराया बसुलती हैं। इसी के साथ दिल्ली के अन्य क्षेत्रों की तुलना में, यह अधिक किफायती आवास प्रदान करता है। अनिगमित होने के बावजूद, इसके केंद्रीय स्थान ने इसे रुचि का एक प्रमुख क्षेत्र बना दिया है, जो छतरपुर और मुनिरका मेट्रो स्टेशन वाली लाइन दिल्ली के बाकी हिस्सों से जोड़ती है। यहाँ पर एक बड़ा शॉपिंग मॉल और अस्पताल निकट होने के कारण पड़ोस में महानगरीय माहौल भी प्रतीत होता है। यहाँ के इन कारकों ने किशनगढ़ क्षेत्र को अफ्रीकी

नागरिकों के लिए एक व्यवहार्य विकल्प बना दिया है। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र अफ्रीकी समुदाय को एक साथ रहने के विकल्प ने इनको भविष्य में संबंध बनाने के लिए सुरक्षा और अवसर भी प्रदान किए हैं। यह कुछ कारण हैं जिनकी वजह से अफ़्रीकी अप्रवासियों ने इस क्षेत्र में बसना चुना है।

किशनगढ़ क्षेत्र में अफ्रीकी निवासियों के सांस्कृतिक पहलुओं का बदलता स्वरूप

किशनगढ़ क्षेत्र में अफ्रीकी नागरिकों और मूल आबादी के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कई उदाहरण देखे जा सकते हैं। अफ़्रीकी समुदाय के सदस्य यहाँ के समाज की जीवनशैली और संस्कृति को आत्मसात करने और उसके अनुरूप ढलने का प्रयास करते हुए पाए जाते हैं। वास्तव में, कुछ नागरिकों ने विशेष रूप से अफ्रीकी नागरिक समुदाय के लिए अफ्रीकी मसाले, किराने का सामान, घर का बना भोजन और स्वदेशी व्यंजन बेचने वाली दुकानें इस क्षेत्र में खोलीं हैं। यहाँ पर बहुत से अफ़्रीकी रसोईघर स्थापित किए जा चुके हैं। यदि इन पहलुओं पर विचार करते हैं तो किशनगढ़ को बहुसंस्कृतिवाद के एक प्रमुख उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि अफ्रीकी नागरिकों ने भारतीय समाज में शामिल होने के लिए अपनी जीवन के शैली के बहुत से तरीकों को बदल दिया है। यहाँ पर बहुत से अफ़्रीकी निवासी स्वेच्छा से भारतीय समाज द्वारा निर्धारित सांस्कृतिक मानदंडों और नियमों का पालन करते हुए पाए जाते हैं। यह यहाँ कि स्थानीय भाषा, हिंदी सीखने का भी प्रयास कर रहे हैं। बहुत से अफ़्रीकी नागरिकों ने भी अपने खान-पान की आदतों में भारतीय खान-पान के स्वरूप को आत्मसात किया है, और भारतीय व्यंजनों को अपने भोजन में शामिल किया है, जबकि यह अपने स्वयं के व्यंजनों को भी याद करते हैं। विभिन्न स्तरों पर सांस्कृतिक संपर्क और आदान-प्रदान हुआ है, जिसमें उत्तरदाताओं ने भारतीय मित्रों और भारत में जीवन के आनंद के विषय में बताया है। इसी के साथ क्षेत्र अध्ययन के तथ्यों से यह भी प्राप्त हुआ कि स्थानीय भारतीय समुदाय के कुछ सदस्य अक्सर अफ़्रीकी दुकानों और बुटीक में जाते हैं, जो कि दोनों समुदायों के बीच सीखने और आदान-प्रदान की संभावना का संकेत देते हैं। अफ्रीकी नागरिकों स्तर पर विविध अफ्रीकी समुदाय के दृष्टिकोण से, इन दुकानों की उपस्थिति को बहुसंस्कृतिवाद के प्रतीक के रूप में यहाँ पर देखा जा सकता है।

यह अफ़्रीकी दुकानें सभी अफ़्रीकी नागरिकों के साथ-साथ भारतीय स्थानीय व्यक्तियों के लिए भी सुलभ रूप से उपलब्ध हैं, जो विभिन्न अफ़्रीकी उत्पादों को देखने और आज़माने के लिए उत्सुक होते हैं। बहुत कम संख्या में भारतीय नागरिक अफ्रीकी मसालों और किराने का सामान खोजते और खरीदते हैं। इसी तरह, अफ्रीकी समुदाय ने भारतीय भोजन और सब्जियों की खोज की है और उन्हें आजमाया है, जिनमें से कुछ मूल देश से अलग है और कुछ बहुत समान हैं। अफ्रीका की एक नागरिक जो अपने पति के साथ रहती है जो मानती हैं कि मुझे भारतीय खाना बहुत पसंद है, यह ऐसी चीज़ नहीं है जो हमें अपने देश में मिलती है। मुझे इससे प्यार है। मुझे अरबी, कसावा और केले के चिप्स जैसे देशी खाद्य पदार्थ खरीदने में भी आनंद आता है। परिणामस्वरूप, हमें दिल्ली में रहना अधिक आरामदायक लगता है। बाज़ार में ऐसे ही खाद्य पदार्थ मिलने से मुझे "घर से दूर घर" जैसा एहसास होता है। मुझे शॉपिंग मॉल्स में जाना भी अच्छा लगता है। यह हमारे घर के ठीक सामने है। मैं अपने पति के साथ वहां जाती हूं. यह शहर की कठिनाइयों की भरपाई करता है। जब हम पहली बार खिड़की आये तो हम हर दिन वहां जाते थे। मैंने लगभग हर दिन केएफसी से खाना खाया। केएफसी का जिंजर बर्गर मेरा पसंदीदा है, इसलिए मैं वहां खूब खाता हूं। किन्तु अंतरसांस्कृतिक अनुकूलन, आदान-प्रदान और बातचीत के अलावा, अफ्रीकी नागरिकों को स्थानीय समुदाय के साथ संघर्ष तथा शत्रुता का सामना भी करना पड़ता है।

इसी के साथ किशनगढ़ में बसने वाले अफ्रीकी नागरिक अफ्रीका के विभिन्न देशों से आए हैं, जिनमें केन्या, तंजानिया, सोमालिया, घाना, इथियोपिया, इरिट्रिया, नाइजीरिया, रवांडा, युगांडा, बुरुंडी, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और कैमरून शामिल हैं। उनकी विविध उत्पत्ति के बावजूद, उन सभी को सामूहिक रूप से इस क्षेत्र में कल्ला या हब्शी कहा जाता है। दिलचस्प बात यह है कि हब्शी, जिसका अर्थ एबिसिनिया या इथियोपिया के व्यक्तियों, की उत्पत्ति पूर्वी अफ्रीका से भारत आए एक समुदाय के ऐतिहासिक वृत्तांतों से हुई है। पिछली शताब्दियों में इस शब्द का प्रयोग प्रवासी के बजाय राष्ट्रवादी संदर्भ में किया जाता था। हालाँकि, समकालीन समय में, 'नीग्रो' शब्द की आपराधिकता, आदिमता और अवैधता जैसे नकारात्मक अर्थ हैं। इससे भारत में अफ्रीकी समुदाय का अलगाव और नस्लीय पहचान शुरूआत देखी जा सकती है। स्थानीय भारतीय समुदाय ने लेबल के रूप में कल्ला और 'हब्शी' जैसे शब्दों का उपयोग करके विभिन्न अफ्रीकी देशों और जातियों के बीच अंतर करने के लिए संघर्ष करते हैं। यह शब्द भारत में अफ्रीकी समुदाय के प्रतीक बन गए हैं। 'नीग्रो' शब्द नकारात्मक रूढ़िवादिता और ड्रग्स, वेश्यावृत्ति और अवैध आप्रवासन जैसी पूर्वकल्पित धारणाओं से जुड़ा हुआ है। शहरी परिवेश में, इन संघों का अफ्रीकी समुदाय पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जिसके कारण कुछ समुदायों में नस्लीय अलगाव और बहिष्कार हुआ।

प्रस्तुत लेख एक सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के रूप में नस्ल की अवधारणाओं का विश्लेषण करता है कि शहरी क्षेत्रों में भाषा और स्थानिक बहिष्कार के माध्यम इनके प्रकट होने का स्वरूप कैसा है। दिल्ली में अफ्रीकी समुदायों की नीतियों की जांच करके, यह समाज के भीतर अलगाव और बहिष्कार के विभिन्न रूपों को उजागर करता है। जैसे कि रूढ़िवादिता के आधार पर भेदभाव के कारण संभ्रांत अफ्रीकी समुदायों के परिवारों के लिए यहाँ के मकान मालिक अपनी संपत्तियों को किराए पर देने से इनकार कर देते हैं। प्रस्तुत लेख अपने अफ्रीकी साथी नागरिकों के प्रति स्थानीय निवासियों की मान्यताओं और दृष्टिकोण की जांच करने के लिए एक रूपरेखा भी विकसित करता है। इसके अतिरिक्त, यह अफ्रीकी नागरिकों को समाज में एकीकृत होने में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करता है, जिसमें व्यक्तियों और सरकारी अधिकारियों दोनों का भेदभाव भी शामिल है। लेख आगे शहरी स्वरूप में अफ्रीकी निवासियों के उद्भव की पड़ताल करते हुए कि कैसे सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक कारक अफ्रीकी पहचान के निर्माण में योगदान करते हैं। यह लेख यह समझने का प्रयास करता है कि भारतीय समाज के अंतर्गत अफ्रीकी पहचान को बनाए रखने में रूढ़िवादिता, भाषा और सामाजिक संरचनाओं की भूमिका किस प्रकार अपना असर बनाए रखती है।

भारत और अफ़्रीका के बीच संबंधों ने अफ़्रीका से भारत की ओर लोगों के आवागमन में प्रमुख भूमिका निभाई है। दोनों देशों में अफ्रीकी समुदायों की उपस्थिति वैश्विक दक्षिण में जनसांख्यिकीय बदलाव और प्रवासन पैटर्न का परिणाम है। हालाँकि, भारत में अफ्रीकी समूहों का गठन काफी हद तक शहरी भेदभाव और अलगाव की प्रतिक्रिया है। मौजूदा पूर्वाग्रहों के कारण, नागरिकों को दिल्ली जैसे प्रमुख शहरों में आवास सुरक्षित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे स्थानीय समुदायों का निर्माण होता है। इन अफ़्रीकी समुदायों का उद्भव विभिन्न कारकों से उत्पन्न सामाजिक और स्थानिक बहिष्कार का प्रतिबिंब है। लेख में व्यक्तियों के अनुभवों पर चर्चा की गई है, जिसमें नस्लीय प्रोफाइलिंग, भेदभाव और हिंसा के उदाहरण शामिल हैं, जिन्होंने इन समूहों को आकार देने में भूमिका निभाई है। जिससे यह तथ्य सामने आते हैं कि अफ्रीकी नागरिकों का

एक महत्वपूर्ण हिस्सा बेहतर अवसरों की तलाश में दुनिया के विभिन्न हिस्सों से शहरों की ओर पलायन करता है [10] ।

अफ्रीकी नागरिक और स्थानिक अलगाव का स्वरूप

पृथक्करण और स्थानिक विभाजन की जांच करने वाले अध्ययनों में विभिन्न दृष्टिकोण उपलब्ध हैं, जिनका उद्देश्य विशेष रूप से उन कारकों और प्रक्रियाओं को समझना है जो शहरी क्षेत्रों में विभाजन का कारण बनते हैं [11] । समूहों के बीच विभाजन विभिन्न कारकों पर आधारित है, जैसे आय, राष्ट्रीयता, वर्ग, धन, व्यवसाय, नस्ल, रंग, जातीयता, भाषा, व्यक्तिगत सांस्कृतिक प्राथमिकताएँ, या जीवन शैली (मार्किस 2005:15)। इसके परिणामस्वरूप स्थान अलग हो जाता है और अलग-अलग समूहों का निर्माण होता है। मार्क्युज़ दर्शाता है कि स्थानिक प्रक्रियाओं ने गेटेड समुदायों, जातीय परिक्षेत्रों, धार्मिक समुदायों और यहूदी बस्ती जैसे विभिन्न क्लस्टरिंग पैटर्न के विकास को जन्म दिया है, लेकिन अलगाव के स्वीकार्य से अस्वीकार्य रूपों के स्पेक्ट्रम पर इन विभाजनों का विश्लेषण करना आवश्यक है।

साथ ही, मार्क्युज़ पृथक्करण को उस प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास करते हैं जिसके द्वारा एक जनसंख्या समुदाय जिसे हीन माना जाता है (आमतौर पर नस्ल के कारण) को मजबूर किया जाता है, यानी अनैच्छिक रूप से, एक परिभाषित स्थानिक क्षेत्र में समूहीकृत किया जाता है, यानी एक यहूदी बस्ती में। पृथक्करण एक यहूदी बस्ती को बनाने और बनाए रखने की प्रक्रिया है। पृथक्करण नस्ल के आधार पर पृथक्करण है। संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिकांश यहूदी बस्ती नस्लीय यहूदी बस्ती हैं। बाज़ार पृथक्करण एक समानांतर प्रक्रिया है जो रियल एस्टेट बाज़ार में होती है, जो कम आय वाले लोगों को वर्ग यहूदी बस्ती में विभाजित करती है। इसके अलावा, अलगाव की प्रक्रिया स्थानिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों के कारण भी हो सकती है। पूंजीवादी समाजों में स्थानिक अलगाव को बाज़ार के एक कार्य के रूप में भी देखा जा सकता है। मार्क्युज़ का तर्क है कि वर्ग, आय, नस्ल, राष्ट्रीयता, भाषा और शक्ति के आधार पर समूह बन सकते हैं। जिनके समाज में विभिन्न रूप घटित होते है जो कि बहिष्करण का कारण बन सकते हैं [12] ।

क्षेत्र अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के अनुसार यह कहा जा सकता है कि बहुत से मकान मालिक सांस्कृतिक मतभेदों के कारण अफ्रीकी नागरिकों को आवास देने से इनकार करते हैं, जिससे यहाँ की स्थानिक संस्कृति और स्वरूप के मध्य एक संबंध बन रहा है। यह परिदृश्य स्थानिक स्वरूप को प्रभावित करने वाले तीन मुख्य कारकों पर प्रकाश डालता है: सामाजिक संस्कृति, अर्थव्यवस्था (भूमि-उपयोग का प्रतिरूप), और सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक संस्तरण। भाषा, खान-पान और पहनावे की शैलियों सहित सांस्कृतिक भिन्नताएँ नस्ल, राष्ट्रीयता, धर्म या जीवन शैली के आधार पर विभाजन पैदा कर सकती हैं। आर्थिक कारक स्थानिक स्वरूप को एक निश्चित आकार देने, तथा आर्थिक तर्क के आधार पर व्यवसायों, और आवासीय क्षेत्रों के लिए भूमि-उपयोग आवंटन निर्धारित करने में भी भूमिका निभाते हैं।

इस क्षेत्र में उद्योग और व्यापार इनको एक समुदाय के रूप में एकत्रित रहने के लिए तैयार करते हैं, क्योंकि व्यक्तियों को अपनी नौकरियों तक आसान पहुंच के लिए परिवहन मार्गों के करीब रहने की आवश्यकता होती है। वरडी का मानना है कि बहुत बार यह निकटता आवासीय अलगाव का कारण बन सकती है, खासकर जब कंपनियां अपने श्रमिकों के लिए आवास प्रदान करती हैं। इसी के साथ अफ्रीकी नागरिकों के वर्ग, आय और अन्य कारक सामाजिक स्थिति निर्धारित करने में भूमिका निभाते हैं। यह सामाजिक-आर्थिक संकेतक अंतर्निहित शक्ति गतिशीलता को समाज में उजागर करते हुए प्रतीत होते हैं। इसी के साथ राजनीतिक, कानूनी और सामाजिक व्यवस्था सहित सत्ता के विभिन्न प्रतिरूप भी इनको एक साथ समुच्चयित रूप से रहने में योगदान करते हैं [13] ।

पार्क के अनुसार सांस्कृतिक, सामाजिक भूमिका और संरचनात्मक सीमांतता से संबंधित स्थानिक सामाजिक संरचना के स्वरूप पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं। वह मानते हैं कि शहरी स्थानों में चल रहे विभिन्न कारक अलगाव और बहिष्कार की भावनाओं में योगदान करते हैं। उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक सीमांतता, किसी संस्कृति की पदानुक्रमित स्थिति और संस्कृतियों के भीतर और बीच स्वीकृति, अस्वीकृति, संबद्धता और अलगाव की गतिशीलता से प्रभावित होती है।

प्रस्तुत लेख यह चर्चा करता है कि किसी विशिष्ट संदर्भ में 'समावेशी मानव बस्तियों' को प्राप्त करने के लिए शहर कैसे अधिक समावेशी बन सकता है। इस प्रकार यह शहरी क्षेत्रों में सामाजिक और संरचनात्मक गतिशीलता के अंतर्संबंध का विश्लेषण करने का प्रयास करता है जो कि बहिष्करणीय व्यवहार और अलगाव में योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, यह पता लगता है कि शहरी समाज की नीतियां इन सामाजिक घटनाओं को कैसे प्रभावित करती है [14] ।

निष्कर्ष

ग्लोबल साउथ पार्टनरशिप, अफ्रीका और भारत के बीच द्विपक्षीय संबंध आधुनिक युग में निजी और सार्वजनिक दोनों संस्थानों में व्यावसायिक और शैक्षिक संभावनाओं का पता लगाने के लिए अफ्रीकियों को भारत में प्रवास करने के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। हालाँकि, भारत आने पर अफ्रीकी नागरिकों को बहुत सी विभिन्न चुनौतियों और अनुभवों का सामना करना पड़ता है। इससे न केवल जनसंख्या में परिवर्तन होता है, बल्कि शहरी स्थान भी प्रभावित होते हैं। यह मोनोग्राफ शहरी स्थानों पर प्रवासन, वैश्वीकरण और नस्ल के प्रभाव की जांच करने के लिए नृवंशविज्ञान डेटा का उपयोग करता है। भारत के द्वारा 1991 में शुरू किए गए आर्थिक सुधारों और उदारीकरण नीतियों ने निजी खिलाड़ियों और उद्योगों के लिए वैश्विक भागीदारी स्थापित करने के दरवाजे खोल दिए हैं। इसी के साथ वैश्वीकरण, व्यक्तियों के लिए कई विकल्प और रास्ते प्रदान करते हुए हैं।

तथ्यों के द्वारा यह कहा जा सकता है कि कुछ अफ्रीकी लोग बेहतर अवसरों की तलाश में भारत की यात्रा करते हैं। वैश्वीकरण द्वारा लाए गए विभिन्न अवसरों के अलावा, हाल ही में वैश्विक प्रवासन युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता और सरकारी प्रणालियों के टूटने के कारण भी कुछ अफ्रीकी नागरिक भारत आए हैं। इसलिए संघर्ष औरयह माँ सकते हैं कि संकट जैसे मुद्दों के कारण होने वाले वैश्विक प्रवासन के परिणामस्वरूप नवउदारवादी युग में प्रवासन अध्ययन का महत्व बढ़ गया है। वर्तमान में, एक व्यापक वैश्विक नीति ढांचे में कुछ कमी देखने को मिलती है जो कि प्रवासियों की किशनगढ़ क्षेत्र में रहने की स्थिति, कमजोरियों, बुनियादी संसाधनों तक पहुंच के साथ-साथ अनुकूलन और पुनर्वास की प्रक्रिया के दौरान नागरिक समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली पहचान, जातीयता, लिंग, हाशिए के मुद्दों पर केंद्रित हो सकती है। देश की अर्थव्यवस्था पर आर्थिक दबाव के कारण, कई सरकारें युद्ध से विस्थापित जातीय समूहों को स्वीकार करने में झिझक रही हैं। हालाँकि, मेजबान देशों में अनुकूलन और पुनर्वास की प्रक्रिया के दौरान युद्ध और संघर्ष से निपटने के दौरान आघात, स्मृति और हिंसा के अनुभव को समझने के लिए शरण चाहने वालों और शरणार्थियों की व्यापक समझ होना आवश्यक है।

अध्ययन की कार्य पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र की शुरुआत में शोधार्थी ने अपने शोध विषय से संबंधित किताबों, लेखों, सरकारी दस्तावेजों, आदियों को एकत्रित करके उनकी समीक्षा की तथा अपने विषय विशेषज्ञ के साथ भारत में

निवास कर रहे अफ्रीकी नागरिकों के मुख्य मुद्दों को कैसे समझा जाए इस विषय पर समझ मजबूत हुई। इसी के साथ द्वितीयक श्रोतों के अध्ययन के उपरान्त अपने विषय विशेषज्ञ के सुझावों के अनुसार किशनगढ़ क्षेत्र एक पायलेट अध्ययन किया गया जिसके माध्यम से यहाँ पर अफ्रीकी निवासियों के विषय में बहुत से तथ्यों की जानकारी प्राप्त हुई, जिन तथ्यों के माध्यम से अफ्रीकी महिलाओं के मुद्दों को भी विश्लेषण किया जा सका।

इसी के साथ साथ शोध अध्ययन को पूरा करने के लिए शोधार्थी ने अपने अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक तथ्यों को एकत्रित करने के लिए किशनगढ़ क्षेत्र में पहले से निवास कर रहे मजदूर, अफ्रीकी नागरिक, अफ्रीकी दुकानदार, और उनके नियमित ग्राहकों तथा अफ्रीकीयों के लिए रोजमर्रा के सामान पहुँचाने आने वाले जैसे कि ठेले वाले (फल तथा सब्जी), उस क्षेत्र मैं काम कर रहे चाय वाले, उस क्षेत्र के भारतीय दुकानदार, आदियों के साथ ओपन एंडेड विचार-विमर्श, गहन साक्षात्कार और अपने उत्तरदाताओं के एकल अध्ययन के द्वारा तथ्य एकत्रित किये हैं। शोधार्थी ने किशनगढ़ क्षेत्र में निवास कर रहे अफ्रीकी नागरिकों (महिला और पुरुष दोनों) के साथ सहभागी अवलोकन के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया है। इसी के साथ शोधार्थी अपने बुनियादी उत्तरदाताओं के साथ लगातार संपर्क में रहा है, जिससे अध्ययन से सम्बन्धित सही तथ्य प्राप्त किये जा सकें।

शोधार्थी ने द्वितीयक तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए अकादमी लिखित किताबें, लेख, गैर सरकारी संस्थाओं के विवरण व् रिपोर्ट्स, शहर के स्थानीय समाचार पत्रों, तथा शहर के स्थानीय पुस्तकालय, दस्तावेज़ी फिल्म, राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली आदि से तथ्यों की जानकारी प्राप्त की है। शोधार्थी ने शोध अध्ययन के अंतर्गत जिन उत्तरदाताओं से प्राथमिक तथ्य प्राप्त किए हैं उनके वास्तविक नामों, तथा अन्य कोई भी ऐसे तथ्य जो कि अफ्रीकी महिलाओं से जुड़े हुए हैं, जिनसे उनकी वास्तविक पहचान हो सकती है, तो उनके असली (वास्तविक नाम) बदल कर लिखे गए हैं, ताकि भविष्य में कभी भी उत्तराताओं को किसी भी प्रकार की क्षति ना पहुंचे।

References

1. Verma Koyal. African Clusters in India, Routledge Taylor & Francis Group, London and New York, 2023
2. Basu, Helene. Indian-Siddi African Diaspora: A Query in Cultural Exchange and Transformation in the Indian Ocean World, California: University of California, 2002, 1-40.
3. Verma Koyal. African Clusters in India, Routledge Taylor & Francis Group, London and New York, 2023
4. मोहन लाल गुज्जर 56 वर्षीय उत्तरदाता जो कि किशनगढ़ क्षेत्र में मकान का मालिक हैं तथा इन्होंने बहुत से अफ्रीकी नागरिकों को अपने मकान में किरायेदार के रूप में रखा है, 20 मार्च 2024।
5. दीपक कुमार 42 वर्षीय उत्तरदाता जो कि किशनगढ़ क्षेत्र में मकान का मालिक का केयर टेकर हैं, तथा इस मकान में बहुत से अफ्रीकी नागरिकों किरायेदार के रूप में निवास करते हैं, 18 मार्च 2024।
6. रोजा 24 वर्षीय अफ्रीकी महिला नागरिक उत्तरदाता जो कि किशनगढ़ में किराये के मकान में निवास करती है 16 मार्च 2024।
7. Ibid
8. जैस्मिन 30 वर्षीय अफ्रीकी महिला नागरिक उत्तरदाता जो कि किशनगढ़ में किराये के मकान में निवास करती है 16 मार्च 2024।
9. गुलाबों 36 वर्षीय अफ्रीकी महिला नागरिक जो कि किशनगढ़ में किराये के मकान में निवास करती है और यहाँ पर दुकान में काम करती है 16 मार्च 2024।
10. Hannerz, Ulf. Transnational Connections: Culture, People, Places, Routledge, London and New York, 2002.
11. Castells, Manuel. The Urban Question: A Marxist Approach. (A. Sheridan Trans.) Cambridge, MA: MIT Press, 1976.
12. Marcuse, Peter. Desegregating the City: Ghettos, Enclaves, & Inequality in Enclaves Yes, Ghettos No: Segregation and the State in David P. Varady (ed.). New York: State University of New York Press, 2005, pp: 15-30.
13. Varady, P. David. Desegregating the City Ghettos, Enclaves, and Inequality. Albany: State University of New York Press, New York, 2005.
14. Sanjay. Entangled Urbanism: Slum, Gated Community and Shopping Mall in Delhi and Gurgaon. Oxford University Press, New Delhi, 2014.